

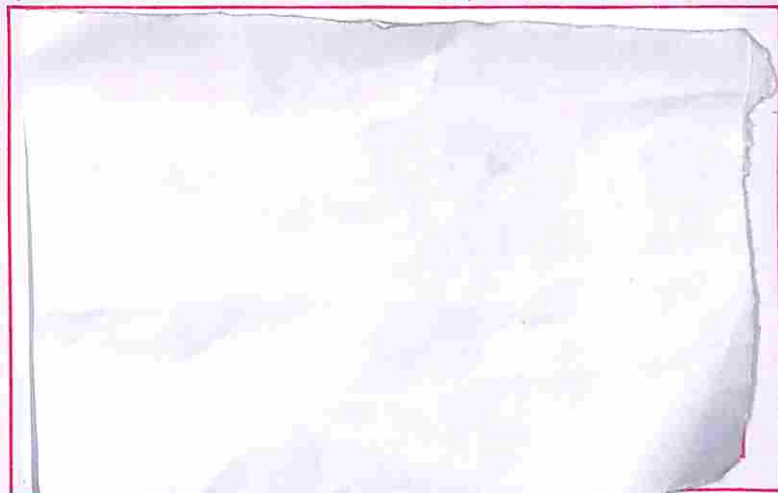


माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा



(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)



नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी ☒ अंग्रेजी ☐

विषय संस्कृत साहित्य

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक 18/02/2026

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)।

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	4
2	5	20	
3	2	21	
4	1	22	
5	8	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	8	28	
11	5	29	
12	5	30	
13	5	31	
14	3	योग	80
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर

मुकु

संकेतांक

31553

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 181/2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:-
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कैल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस-पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक प्रश्न संख्या परीक्षार्थी उत्तर

- +1 ① (i) (ब) विद्यया ✓
- +1 (ii) (स) श्रीमद्भगवद्गीतातः ✓
- +1 (iii) (ब) शुकनासः ✓
- +1 (iv) (अ) अविवेकः ✓
- +1 (v) (स) गुप्तचरस्य ✓
- +1 (vi) (अ) योगः ✓
- +1 (vii) (द) कर्मणि ✓
- +1 (viii) (ब) ऽऽऽ ✓
- +1 (ix) (स) सुध्युपास्यः ✓
- +1 (x) (अ) श्चुत्वम् ✓
- +1 (xi) (ब) मी ऽनुस्वारः ✓
- +1 (xii) (द) उत्प्रेक्षायाम् ✓

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

+

(i)

अयि जात । कषितव्यं कषय ।

+

(ii)

न श्रुतं आकर्णयति ।

+

(iii)

मम जीवनप्रदीपौ निर्वापितौ भावितुम् इच्छति ।

+

(iv)

इति जलमध्ये पुष्पाञ्जलिं पत्वा क्षणं स्थितः ।

+

(v)

तस्य राज्येन सह अस्ति कश्चित् सम्पर्कः ।

BSEH-181/2026

+

(क)

विभक्ति
कारण

-

द्वितीया

-

'धिक' शब्द योगे

+

(ख)

विभक्ति
कारण

-

चतुर्थी

-

'नम' शब्द योगे

(2)

(1)

(4)

अलंकारस्य नाम = यमक अलंकारः ।



રીક્ષક દ્વારા પ્રવક્તા અંક પ્રશ્ન સંખ્યા પરીક્ષાર્થી ઉત્તર

સ્વ05 - બ

- +2 (5) (ક) શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાયાં સપ્તશતકમ્ (૭૦૦) શ્લોકાઃ સંતિ ।
- +2 (ખ) લાલમુનિશ્વરસ્ય પ્રસિદ્ધાઃ રચનાઃ સંતિ - હર્ષચરિત , કાદમ્બરી, ચણ્ડીશતકમ્ , પાર્વતી પરિભાષ ।
- +2 (ગ) શ્રીચન્દ્રશેખરદાસવર્માઃ પ્રસિદ્ધૌ કથાસંગ્રહૌ સ્ત -
(1) પાષાણીકન્યા (2) વૌમા ।
- +2 (ઘ) શિવરામ વિજયસ્ય ઉપન્યાસસ્ય રચયિતા " પાણિન
અમ્બિકાદત્તવ્યાસ' અસ્તિ ।
- (8) (8) અન્વય - યદ્યપિ સર્વત્ર નીરજ - રાખિતમં નીરં આસ્તિ
મરાલસ્ય માનસં માનસં વિના ન રમતે ।

(2)

પરીક્ષક દ્વારા
પ્રદત્ત અંકપ્રશ્ન
સંખ્યા

પરીક્ષાર્થી ઉત્તર

(૬) (અ) ઉપેન્દ્રવજ્રા છંદલક્ષણ - ઉપેન્દ્રવજ્રા ખતખાસ્તો ગો ।ઉદા:

જગઠા તગઠા જગઠા ગુગુ
। ડ। ડ ડ। । ડ। ડ ડ
ત્વમેવ માતાચ પિતાત્વમેવ = ॥ વર્ણ

। ડ। ડ ડ। । ડ। ડ ડ
ત્વમેવ બંધુશ્ચ સખા ત્વમેવ = ॥ વર્ણ

। ડ। ડ ડ । । ડ । ડ ડ
ત્વમેવ વિદ્યા પ્રવિળં ત્વમેવ = ॥ વર્ણ

। ડ। ડ ડ। । ડ। ડ ડ
ત્વમેવ સર્વ મમ દેવ દેવ ॥ = ॥ વર્ણ



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

मगल सगल जगल सगल तगल तगल
५५५ ११ ५ १५१ १५५ ५५१ ५५१ १

7

क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं भवाग्भूषणं भूषणम्=19

2

छन्दस्य नाम - शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः

9

पसंग - प्रस्तुत श्लोकांश हमारी पाठ्यपुस्तक
'शाश्वती भाग-2' के 'कर्मगौरवम्' नामक
शीर्षक से लिया गया।

मूलतः यह श्लोकांश 'श्रीमद्भगवद्गीता' ले लिया गया है।

भावार्थ - भगवान् श्रीकृष्ण युद्धभूमि में विषादग्रस्त
अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि तुम्हारा
आधिकार कर्म करने में है, इसलिए तुम आसक्ति
रहित होकर कर्म करो। फल की इच्छा मत करो, क्योंकि
फल में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। तुम्हारा
अनुराग अकर्म की तरह भी नहीं होना चाहिए।

विशेष - श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा विषादग्रस्त
अर्जुन को कर्म का सद्गुपदेश दिया गया है।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

- (10)
- (क) अतिलोभस्य आधिकाधिकं ।
- (ii)
- (ख) अतिलोभिहजनाः दुष्टानि कर्माणि कुर्वन्ति, चौर्यं
कुर्वन्ति, हत्यां कुर्वन्ति ।
- (ग) सीमां अतिलोभः ।
- (i)
- (ii) विनाशकारकः ।
- (iii) विद्वांसः ।
- (घ) शीर्षक - "अतिलोभस्य दुष्परिणाम" ।

8

खण्ड-ब

- (क) मलङ्गलम् ।
- (ii)
- (ख) बधुना श्रीनारैण निर्मितः अनाथ आश्रमः
महाशुभेण परिणितः ।
- (ग) (ब) स्वाभिता ।
- (i)
- (ii) (अ) अहं ।

5



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

+1 (क) कर्म ।

+2 (ख) अकर्मणः ते द्वारीरयात्रापि न प्रसिद्ध्येत् ।

+1 (ग) (i) (ब) कुरु ।

+1 (ii) (स) कर्म ।

5

+1 (क) योगः ।

+2 (ख) सागारिका योगशिक्षायाः विषये मातुःमुखात् श्रुतवती ।

+1 (ग) (i) (अ) नूतनः ।

+1 (ii) (स) वर्तत ।

5

14

+1 (ख) कः स्वकायं न विरमति ?

+1 (घ) कः योग कथ्यते ?

+1 (ङ) चातकः कं न याचते ?

3

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

15.

दीनबन्धु: श्रीनाथार:

दीनबन्धु श्रीनाथार पाठ श्रीचन्द्रशेखरदास वर्मा द्वारा
रचित 'पाषाणीकन्या' कथासंग्रह से लिया गया।
मूलतः यह उडिया भाषा में रचित है, जिसका अनुवाद
नारायणदास के द्वारा किया गया। इसमें श्रीनाथार
नामक व्यक्ति की ईमानदारी, कर्मठता का वर्णन किया
गया है। श्रीनाथार का पालन पोषण केरल के एक अनाथ
आश्रम में हुआ था। उनका स्थानान्तरण केन्द्र सरकार से
ओडिसा सरकार के अधीन हो गया। वे स्वल्पभाषी,
सहज व कर्मठ थे। वे कार्यालय में समय पर आकर
अपना नियत कार्य करते थे। उनके कार्य को देखकर
उनकी नियुक्ति खाद्यापूर्ति विभाग में सचिव के पद
पर कर दी गयी। कुछ ही समय में इस विभाग में कार्य
में फस गुणा वृद्धि हो गयी। विभाग पर लोगों के आरोप भी
कम हो गये। एक दिन श्रीनाथार एक पत्र पढ़ रहे थे। उनकी
आँखों में आँसू आ रहे थे। उन्होंने अपने लिपिक श्रीदास
को अपना स्थानान्तरण पत्र तैयार करने को कहा। विभाग ने
उन्हें विदाई दी। कुछ दिनों बाद लिपिक श्रीदास को कार्यालय
में एक पत्र मिला जो सुश्री मेरी द्वारा लिखा गया था, जिसे
पास वे अपना बाधे से आधिकार्य अनाथ आश्रम के लिए
भेजते थे। उस पत्र में लिखा था कि अब मेरे जाने का समय
आ गया है। तुम्हारे (श्रीनाथार) द्वारा मुझे सौंपा गया
यह आश्रम आज बड़े बूढ़ों के समान फूल-फूल रहा है।
यहाँ 100 से अधिक बच्चों का पालन पोषण हो रहा है।
मैं अंतिम बार तुमसे मिलना चाहती हूँ।

तुम्हारी प्यारी
सुश्री मेरी।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

16.

अनुप्रास अलङ्कारःलक्षण - अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैभवेऽपि स्वरस्य यत् ।लक्षण का अर्थ - जहाँ समान वर्णों की आवृत्ति बार-बार हो, वहाँ अनुप्रास अलङ्कार होता है ।उदाहरण -काकः कृष्णः पिकूः कृष्णः कोभीदः पिककाकयोः ।
वसंत काले सम्प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

यहाँ 'क' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार होने के कारण अनुप्रास अलङ्कार है ।

(क) एकास्मिन् वने एकः चपलः वानरः वसति स्म ।

(ख) स च अन्यान् वन्यप्राणिनः पीडयति स्म । खगानां मीडानि नाशयति स्म ।

(ग) सर्वे खगाः तस्य दुर्व्यवहारेण पीडिताः जाताः ।

(घ) ते कष्टोपायविषये गौळीम् अकुर्वन् ।

(ङ) तत्र एकैव वृक्षकपोतेन उपायं सूचयित्वा उक्तं अहं सर्वान् कष्टमुत्तवीन् करोमि ।

(च) कपोतेन उक्तं मातुल । मधुमाक्षिकाणां गृहं सुरक्षितम् । शमाः उपहसन्ति ।

(ज) वानरेण मधुमाक्षिकाणां गृहं खादितम् ।

(झ) मधुमाक्षिका दंष्ट्रीन पीडितः वानरः मृतः ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

18.

निबंध - मम प्रियः कविः

महाकविः कालिदासः मम प्रियः कविः आसीत् ।
संस्कृतसाहित्ये क्षेत्रे कालिदासस्य महत्वपूर्ण स्थानं
आसीत् । कालिदासस्य त्रीणि नाटकानि सन्ति -
अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयं,
मालविकाग्निमित्रम् ।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् इति नाटकस्य नायकः राजा
दुष्यन्तः नायिका च शाकुन्तला आसीत् ।
विक्रमोर्वशीयं इति नाटकस्य नायकः विक्रमः
नायिका च उर्वशी आसीत् । अस्मिन् नाटके पञ्च
सर्गाः सन्ति । कालिदासाय उपमालकारः ^{महाकाव्य} प्रियः आसीत्
महाकविः कालिदासस्य द्वौ खण्डकाव्यौ स्त -
रघुवंशम्, कुमारसंभवम् ।
रघुवंशे 19 सर्गाः सन्ति, कुमारसंभवे 17 सर्गाः सन्ति ।
कालिदासस्य द्वौ खण्डकाव्यौ स्त -

ऋतुसंहारः, मेघदूतम् । ऋतुसंहार इति काव्ये
6 सर्गाः सन्ति, अस्मिन् 144 पद्याः सन्ति, अस्मिन्
ऋतुणां वर्णनम् आस्ति ।
मेघदूते 121 पद्याः सन्ति । अस्य द्वौ भागौ स्त
पूर्वमेघः, उत्तरमेघः । अस्मिन् मनुष्याक्रान्ता
छन्द आस्ति । मेघदूतं दूतकाव्यपरंपरायाः प्रथम
ग्रन्थः, गीतिकाव्यपरंपरायाः आदिग्रन्थः आस्ति ।
महाकविः कालिदासः संपूर्णं विश्वं प्रसिद्धः आस्ति ।
सः मम प्रियः कविः आस्ति ।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

+1 (क) उद्याने पुष्पाणि विकसन्ति ।

+1 (ख) वयं प्रातः काले योगाभ्यासं कुर्मः ।

+1 (ग) अहं श्वः आगमिष्यामि ।

+1 (घ) विद्याधनं एव सुखं सुरक्षितं धनम् आस्ति ।

4

समाप्त

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/12/2026



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
-------------------------------	------------------	-------------------

BSER-18/2026

[illegible]



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSHR-181/2026



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
-------------------------------	------------------	-------------------

BSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2026

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

MSR-18/2025

[illegible]

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2026



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/7/2026

